# येसु के प्रेम से प्रज्वलित

## ईश–सेविका
## माता मेरी बेर्नादेत्त किस्पोट्टा
## संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ की संस्थापिका

ख्रीस्त आनन्दित रूथ का जन्म २ जून सन् १८७८ ई. में मांडर पल्ली के एक गाँव, सरगाँव में लूथरन परिवार में हुआ था। यह राँची से ३२ कि. मी. दूर पश्चिम में बसा एक छोटा गाँव है। वह पूरनप्रसाद किस्पोट्टा और पौलिना की प्रथम पुत्री थी। किन्तु दो वर्ष की उम्र में ही उसकी माँ उसे छोड़कर प्रभु की प्यारी हो गई। पूरनप्रसाद के लिए ख्रीस्त आनन्दित रूथ का पालन–पोषण करना नामुमकिन था। अतः उसके पिता ने माग्रेट नामक लड़की से दूसरी शादी की, जिससे तीन संतानें क्रमशः सुशीला, मरियम और ख्रीस्तोफर प्राप्त हुए। लेकिन दुर्भाग्यवश पूरनप्रसाद की दूसरी पत्नी माग्रेट की भी मृत्यु हो गई और उसे तीसरी शादी मुक्ता के साथ करनी पड़ी। तीसरी पत्नी से अदोरा और रोबर्ट दो संतानें हुईं।

ख्रीस्त आनन्दित रूथ की प्रारंभिक पढ़ाई राँची के बेथेसदा स्कूल में हुई, जब वह पाँच वर्ष की थी उसके पिता ने उसे एक लूथरन पास्टर के घर में उसकी शिक्षा–दीक्षा के लिए रखा। नियत समय में पादरी ने उसे बोर्डिंग स्कूल में अन्य लड़कियों के साथ रहने के लिए भेज दिया। ख्रीस्त आनन्दित रूथ बचपन से ही गंभीर एवं उद्‌यमी लड़की थी। उसका व्यक्तित्व अनुकरणीय था। उसमें नयी–नयी चीजों को सीखने व परखने की ललक थी। कभी–कभी छुटि्ट्यों में सरगाँव जाकर चचेरी बहन कृपा के साथ अपना बचपन खेल–कूद कर बिताया करती थी।

समय के साथ–साथ छोटानागपुर की परिस्थिति भी बदलती गयी। सन् १८८५ में फादर कॉन्सटन्ट लीवन्स ये.सं. बेल्जियन पुरोहित के आगमन से छोटानागपुर की धरती ने चैन की सांस ली। लीवन्स के आगमन के पूर्व जमींदारी प्रथा से यहाँ के लोगों का जीवन अनेक

समस्याओं से घिरा हुआ था। लीवन्स ने यहाँ के लोगों की दयनीय स्थिति को अति निकट से देखा। उसने गाँव -गाँव जाकर लोगों को एकत्र कर जमीन संबंधी नियम-कानून से अवगत कराया तथा ख्रीस्तीय जीवन के मूल्यों को जीने के लिए प्रेरित किया। लीवन्स के इस अथक परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि हजारों की संख्या में लोगों ने बपतिस्मा ग्रहण कर काथलिक धर्म को स्वीकार किया।

बेथेस्दा स्कूल

ख्रीस्त आनन्दित रूथ के पिता पूरनप्रसाद किस्पोटट्टा राँची कचहरी में मोख्तार थे इसलिए लीवन्स के इस कार्य में उनका साथ देते थे। अतः फा० लीवन्स के जीवन व कार्य से प्रेरित होकर पूरनप्रसाद ने सपरिवार काथलिक धर्म को स्वीकार किया। काथलिक धर्म स्वीकार करने के कारण पूरनप्रसाद के परिवार को डेराखाना अर्थात् जहाँ वे रहते थे, से निकाल दिया गया। पूरनप्रसाद के पास अब न तो रहने की जगह थी न जमीन। उसे एक बढ़ाई की दुकान में थोड़ी सी जगह मिली जहाँ बाँस-दीवाल के उपर छोटी सी छत बनाकर सपरिवार रहने लगा। किन्तु ख्रीस्त आनन्दित रूथ लूथरन गिरजा ही जाया करती थी। जब वह १० साल की थी तब उसे मालूम हुआ कि उसके माता-पिता और घर के सब लोग रोमन काथलिक बन गये हैं, तो वह बिलकुल चिंता में पड़ गई। जब-जब स्कूल से फुर्सत होती, घर जाकर अपने घर वालों को समझाया करती थी, क्योंकि रोमन काथलिक उसे एक न पसंद थी। वह कहा करती थी रोमन काथलिक बनना आप लोगों की मूर्खता है। उसके ऐसा कहने पर भी परिवार वाले अपने विश्वास में दृढ़ बने रहे। समय बीतता गया और सत्य की खोज में चिड़ियाँ की नाई इस डाली से उस डाली भटकती रही। उसका मन समुद्र की लहरों की तरह उमड़ता-घुमड़ता रहा। सत्य की खोज में वह कभी-कभी अपने माता-पिता व भाई-बहनों के साथ काथलिक गिरजा जाया करती और पवित्र मिस्सा में भाग लेतीं। गिरजा में संतों की मूर्तियों को देखकर उनके मन में प्रश्न उठने लगते थे।

लुथेरन गिरजा, राँची

फादर लीवन्स के आगमन के पाँच वर्ष ही गुजरे थे कि ख्रीस्तीयों की संख्या काफी बढ़ गयी। इसलिए फादरों ने कलकत्ता के आर्चबिशप पौल गुथल्स से गुजारिश की, कि लड़कियों के लिए स्कूल खोलने तथा धर्म की शिक्षा देने के लिए लोरेटो सिस्टरों को भेजे। ऐसा समाचार पाकर बड़ी तत्परता से आर्चबिशप पौल गुथल्स ने लोरेटो सिस्टरों को राँची आकर लड़कियों के लिए कॉन्वेंट स्कूल खोलने का आग्रह किया। उन दिनों चारों ओर घने जंगलों, उँचे -नीचे, पहाड़, पर्वत, नदी- नाला से घिरा छोटानागपुर में आवागमन की कोई सुविधा नहीं थी। एकमात्र साधन  पुसपुस गाड़ी थी, जिसे पाँच या छः कुलियों द्वारा खींचा और ठेला जाता था। इसी पुसपुस गाड़ी से, घने जंगलों को पार करते १६ मार्च सन् १८९०, को चार लोरेटो की धर्मबहनों ने कलकत्ता पुरूलिया से राँची पहुँचकर लड़कियों के लिए स्कूल खोला। स्कूल खुलने की बात सुनकर पूरन प्रसाद अपनी बेटियों को मिशन स्कूल में दाखिला कराया। शुरू में केवल सिसिलिया और बेरोनिका लोरेटो कॉन्वेन्ट में पढ़ती थीं। ख्रीस्त आनन्दित रूथ अब

जर्मन पास्टर का बंगला

तक पादरी के घर में रहकर अपनी पढ़ाई कर रही थी लेकिन उसका पिता चाहता था कि खीस्त आनन्दित रूथ भी लोरेटो कॉन्वेंट में पढ़े।

एक दिन खीस्त आनन्दित रूथ अन्य दिनों की भाँति माता-पिता के साथ पवित्र-मिस्सा के लिए काथलिक गिरजा गईं। उसका दिल एकदम बेचैन था और मन विचलित हो रहा था। पवित्र -मिस्सा के दरमियान अचानक उसका ध्यान गिरजा के एक कोने में रखी गयी लूर्द की माता मरिया पर पड़ी। खीस्त आनन्दित रूथ मरिया की मूर्ति को देखकर मोहित हो गई और कहने लगी “हो न हो, यही धर्म सच्चा धर्म है।” ईश्वर ने लूर्द की माता मरिया के माध्यम से उसके जीवन को एकदम से बदल दिया। इसी दिन से वह काथलिक गिरजा जाने लगी। अतः काफी लंबे अर्से की छान-बीन के बाद ३१ जुलाई १८६० को रोमन काथलिक गिरजा में बपतिस्मा ग्रहण किया और उसका नाम खीस्त आनन्दित रूथ से मेरी बेर्नादेत किस्पोट्टा रखा गया। २१ मई १८६२ को, आर्च बिशप पॉल गुथल्स से दृढ़करण संस्कार ग्रहण किया।

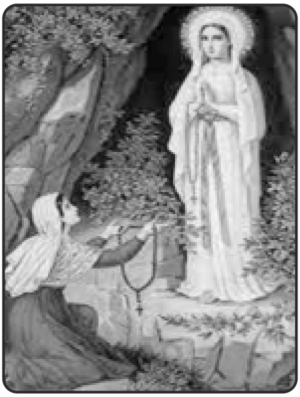

कॉन्वेंट स्कूल में दाखिला के केवल दो ही वर्ष गुजरे थे कि दूसरी आपति आ पड़ी। घर के लोग शादी के लिए जुल्म करने लगे। शादी का जुल्म आँधी के झोकों जैसा दिन - रात आने लगा। किन्तु लोरेटो धर्मबहनों के धार्मिक सुचाल, काम, बात और सेवा भावना से प्रभावित होकर बेर्नादेत्त विचार करने लगी “अगर ये मदर लोग येसु के प्रेम से अपने बाप, माँ, भाई-बहिन, मित्र और कुटुम्बों को, हाँ अपने निज देश ही तक भी त्याग देकर हमारे इस दूर जंगली देश में आकर हम अनजान गरीब और नीच जातियों को इतना प्रेम दुलार करके, हमारी आत्माओं को स्वर्ग में पहुँचाने के फिक्र से दिन रात इतनी मिहनत किया करती हैं, तो क्या हमलोग भी इन्हों के सुन्दर नमूनों के अनुसार अपने देश और जातियों की भलाई के लिए नहीं करेंगी?” अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह भरसक प्रयत्न करती रही। शुरू में बेर्नादेत्त का यह सोच किसी को मालूम नहीं था। वह केवल १४, १५ वर्ष की ही थीं कि माता-पिता शादी के लिए बन्दोबस्त करने लगे किन्तु बेर्नादेत्त के साथ-साथ अन्य तीन लड़कियों सिसिलिया, बेरोनिका और मेरी को भी शादी करना बिलकुल मंजूर न था तब उनका गुप्त सोच उनके माता-पिता को मालूम हुआ। शादी न करना उस समय समाज की संस्कृति व परंपरा के विरूद्ध था।

एक दिन बेर्नादेत्त के पिता को एक चिट्ठी मिली जिसमें गाँव के मुकदमे के विषय और उनके शादी करने से इनकार करने से मिशन कार्य में रुकावट की बात कही गयी थी। स्कूल में भी लड़कों को लाया जाता था ताकि वे अपने लिए वर चुन लें। किन्तु फादरों और मदरों को इस कार्य में सफलता नहीं मिली। उन्होंने कलकत्ता के आर्च बिशप पौल गुथल्स को चिट्ठी लिख कर कहा कि हमारे मिशन कार्य में कुछ लड़कियों के शादी से इनकार करने के कारण रुकावटें आ रही हैं। यह सुनते ही आर्चबिशप ने फरमान निकाला कि जो-जो लड़कियाँ शादी के लिए मंजूर नहीं करती हैं उन्हें स्कूल से निकाल दिया जाय। यह जानकर बेर्नादेत्त कहने

लगीं कि “हम किसके पास जायें कि हमें दिलासा मिले।” घर पहुँचकर, घर में रहते ही उसने अपने पिता को चिट्ठी लिखी कि “हमलोग निर्बुद्धि के कारण से सिस्टर हो नहीं सकती हैं तो मादरों की सेवा अवश्य कर सकेंगी।” किन्तु पिता ने उसकी चिट्ठी का कोई जवाब नहीं दिया और कहने लगा “बेटी तुम्हारी हठ जिद्दी अजीब तरह की है सो हम नहीं बूझ सकते हैं। तुम कहाँ तक मूर्ख उल्लू हो इत्यादि। पिता की बातों को सुनकर बेर्नादित्त एक अंधकार कोठरी में जाकर खूब सिसक-सिसककर रोने लगी। कोई कहता उनका सोच बिलकुल सही है, कोई कहता यह असंभव है कि देश की लड़कियाँ जीवनभर अविवाहित रहें। कोई कहता बचपन से लेकर युवा अवस्था तक उन्हें सबकुछ मिला माँ-बाप, भाई-बहन और संगे-संबधियों का प्यार, कपड़ा-लता इत्यादि, इसलिए ये जीवन के सुख-दुःख से अनभिज्ञ हैं। तभी एक व्यक्ति ने सलाह दी कि उसके धार्मिक सोच से विचलित करने के लिए हमें गहने इत्यादि प्रबंध करना चाहिए। तुरन्त सोनार को बुलाया गया। सोनार दस दिन के अन्दर गहने बनाकर लाया। बेर्नादित्त अब करे क्या! यह देखकर कि ये तो और बड़ी आपत्ति सामने आकर खड़ी हो गयी है, वह घर से भाग निकल झाड़ी में छिपकर चुपचाप रोती रही।

अचानक पड़ोस की सलोमी नामक एक बूढ़ी माँ जलावन के लिए लकड़ी चुनते-चुनते उसी झाड़ी के पास पहुँची जहाँ बेर्नादित्त छिपी रो रही थी। बूढ़ी माँ ने कहा तू यहाँ क्यों छिपी बैठी रो रही हो? घर के लोग तुम्हारी खोज में हैं और सोनार से कुछ गहने बनवाये हैं। वे तुझे पहिनाना चाहते हैं। बेर्नादित्त ने कहा “माँ! मैं गहने पहनना पसन्द नहीं करती हूँ क्योंकि उससे मेरी आत्मा दुनिया की ओर झुककर अन्त में बर्बाद हो जायगी।” बूढ़ी माँ कहने लगी नहीं-नहीं कुछ न होगी, माता -पिता बड़े प्यार से देते हैं। बेर्नादित्त ने कहा-“मैं उन्हें सारे जी-जान से सब कुछ के लिये खूब-खूब धन्यवाद देती हूँ और सदा देती रहूँगी, परन्तु मैं शादी करना और गहना इत्यादि सिंगार पहनना मंजूर नहीं करती हूँ।” बूढ़ी माँ घर पहुँचकर उसके पिता के पास गई और सारी बातें बता दी। बूढ़ी माँ की बातों को सुनते ही घरवाले बेर्नादित्त को ढूढ़ने दौड़ पड़े ।

बेर्नादित्त एक दृढ़ निश्चयी लड़की थी। फादरों और मदरों ने कहा कि इनका सोच बहुत ऊँचा है किन्तु इसे हकीकत में बदलने के लिए काफी लंबा समय चाहिए। अन्ततः इनकी तीव्र इच्छा

को देखकर घर से पुनः वापस बुलाया गया। यह खबर सुनते ही बेर्नादित्त सिसिलिया और मेरी, बेरोनिका को लाने के लिए सरगाँव चल पड़ीं। पूरनप्रसाद का भाई, प्रभुप्रसाद सरगाँव में रहता था। बरसात का समय था बारिश के कारण आगे बढ़ना मुश्किल था। सूर्यास्त हो चुका था, जब वे सुसाई गाँव पहुँचीं, तो गाँव वालों ने कहा कि तुमलोग कैसे जाओगी? नदी भरी हुई है। फिर भी वे आगे बढ़ने के लिए हठ करने लगीं। उनकी इच्छा को जानकर एक आदमी ने नदी पार करने में उनकी मदद की। उन्होंने छोटा नाला को तो पार किया परन्तु बड़ी नदी को कैसे पार करें? नौका को पेड़ में बांध कर नाविक घर चल चुका था। तभी अचानक दूर में उन्होंने एक व्यक्ति को देखा और जोर से आवाज देकर पुकारा-“आके हमों को पार उतारो।” पुकार सुनते ही वह व्यक्ति शीघ्रता से वहाँ आ पहुँचा। उसने नाव पानी में लगाया और बड़ी तेजी से नदी पार किया। नाविक उनका ही रिश्तेदार था। वह उनकी मदद कर अत्यन्त खुश था। वे सप्ताह भर घर में रहकर बेरोनिका को साथ लेकर कॉन्वेंट लौटीं।

ये लड़कियाँ पुनः कॉन्वेंट के विभिन्न कार्यों में लगायी गयीं। एक दिन बीमारी के कारण

कॉन्वेंट की दो लड़कियों की मृत्यृ हो गयी। उस रात को मदर मेरी दे पज्जी के साथ बेर्नादित्त मुर्दा पहरा में रखी गई थी। किन्तु थकान के कारण मदर साढ़े दस बजे रात सोने चली गई। मदर एक बजे तक नहीं लौटी तो बेचारी बेर्नादित्त अकेले भयभीत होकर खूब घबराने लगी, क्योंकि घोर अंधेरी रात, मुर्दा बदन पड़ा, बीमार लड़की दरवाजे के निकट खाट पर पड़ी है। मुर्दे की गंध से गीदड़ भी आकर जुल्म करने लगे। बेचारी बेर्नादित्त थरथर कांपने लगी और हाथ उठाकर उन्हें भगाने का प्रयास करने लगी और डर से भागने का उपाय ढूँढ़ने लगी।

किन्तु मन में सोचने लगी “अगर मैं भाग जाउँ तो इस जीवित लड़की को भारी नुकसान हो सकता है तथा इन मुर्दों को अगर गीदड़ घसीटकर निकाल ले जाये और चीड़- फाड़ दें तो कितना शोकमय और बुरी बात होगी। हाय हाय! मैं क्या करूँगी?” डर से उसकी साँसे बंद होने लगी। बेर्नादित्त ने घबराते जी को संभालकर रखवाल दूतों से यह प्रार्थना की, कि - “आप लोग मुझे मदद दीजिए, क्योंकि यह काम पूरा करने को मुझमें साहस नहीं है। देखिए मैं आप लोगों की रक्षा में इन्हें सौंप देती हूँ, सो कृपा करके इन्हें सब जोखिम और नुकसानी से बचा लीजिये।” जलती मोमबती दरवाजा के बीचो बीच रखकर मदर को बुलाने के लिए कॉन्वेंट दौड़ पड़ी। वह धीमी चाल चलकर मदर के पास पहुँची तो देखती क्या है कि वह थका-माँदा एकदम गहरी नींद में सो रही है। इसलिए बड़ी फुर्ती से स्कूल जाकर अपने साथी लड़कियों को जगाकर मदद के लिए खूब अर्जी विन्ती की। यह सुनते ही बहुत सी लड़कियाँ साथ-साथ हाथ में डंडा लिये चल पड़ीं। किन्तु रखवाल दूतों ने उन्हें सब नुकसानी से बचा रखा था।

उसके जीवन में शादी का जुल्म उनका पीछा करता रहा। परिवार वालों ने बेर्नादित्त, सिसिलिया और बेरोनिका के लिए प्रोतेस्तन्त घर के धनी और शिक्षित लड़कों को चुन रखा था। इधर बेर्नादित्त के पिता पूरनप्रसाद ने विवाह की रीति-रिवाज पूर्ण करने के लिए घर में बड़े भोज की तैयारी कर अपनी बेटियों को बुलाने के लिए कॉन्वेंट चला गया। वह फादर को देखकर झुककर प्रणाम किया और कहने लगा- फादर हमारी लड़कियों को हम घर ले जाने के लिए आये हैं। पिता की बातों को सुनकर फादर ने लड़कियों को इस परीक्षा से विजय पाने तथा धर्म में स्थिर रहने के लिए कुछ अच्छी बातें कही-“कभी निराश मत होईये, बहादुरी दिल और निर्भयता से घर चली जाइये। ईश्वर आप लोगों की रक्षा अवश्य करेगा।” घर पहुँचते ही उन्हें अच्छा भोजन दिया गया किन्तु उदासी भरे दिल और मन को भला आहार रुचिकर लगे कैसे? अच्छा खाना खिलाने-पिलाने के बाद शादी के लिए जुल्म करने लगे। किन्तु वे कहने लगीं - हमलोग शादी नहीं करेंगी। यह सुनकर बेर्नादित्त का पिता क्रोध भरी आवाज में तीनों लड़कियों को अलग-अलग करने का हुक्म दिया ताकि एक दूसरे के पास पहुँच न पायें। तब बेर्नादित्त सभा के बीच लायी गयी। बेर्नादित्त साड़ी से घूंघट ले खड़ी चेहरा छिपाये रोने लगी। तभी एक सुंदर जवान हाथ मिलाने आ पहुँचा, एक स्त्री ने भीड़ में से कहा-बेटी मत रो, देख वही तेरा होने वाले वर हैं, इसलिए आँखे उठाकर उस पर दृष्टि लगा और बड़े आदर व सत्कार से उसके संग हाथ मिला ले।” यह सुनते ही बेर्नादित्त बड़ी तेजी से हाथ खींचकर, मुट्ठी बंद किये, हाथ को कपड़े के अन्दर छिपा ली। यह हरकत देखकर वे कहने लगे देख बेरोनिका और सिसिलिया शादी के लिए बात मान गयी हैं, सिर्फ तुम अकेली जिद्दी मन मतलबी है। इस पर बेर्नादित्त ने कहा - वे शादी होने चाहती हैं तो होवें परन्तु मैं इन्कार करती हूँ।” बेर्नादित्त की बातों को सुन उसके एक नातेदार भाई ने धक्का-मुक्का करके उसे भीड़ से कुछ दूरी ले जाकर थप्पड़ पर थप्पड़ देकर कहने लगा-“प्रेम से न बनता तो तेरे लिए मार ही सही है, बोल, जल्दी बोल शादी करेगी कि नहीं?” बेर्नादित्त ने कहा- नहीं

कभी नहीं। बेर्नादेत्त का पिताजी अपनी बेटी का हाल देखकर कमरे में जाकर बहुत रोने लगा। वह कमरे के अन्दर से गरजकर कहने लगा, लड़की को समझाओ नहीं तो उसे अपने हाथों से गोली मारूंगा और निज प्राण भी खो दूँगा। यह सुनकर लड़के को पुनः बुलाया गया। लड़के ने कहा–"देखिये आप क्यों ऐसी होती है? मैं दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुझे धर्म के विषय में कुछ भी रोक–टोक न करूँगा। एक बार, हाँ केवल एक ही बार दृष्टि लगाके मुझे देख लीजिये कि मैं लंगड़ा, लूला, काना, गूंगा और बहरा हूँ या नहीं? बस, जरा से हाथ मिलाइये मैं उसी से पूरा सन्तुष्ट होउँगा।" किन्तु बेर्नादेत्त ने कहा "मैं कभी न हाथ मिलाऊँगी। मैं आपकी कभी न हूँगी सो जानिये" इत्यादि।

बेर्नादेत्त का पिता सारी बातों को कमरे के अन्दर से सुन रहा था अचानक गरजते हुए हाथ में एक चमचमाती तलवार लेकर अपनी बेटी की ओर दौड़ने लगा, भीड़ चिल्ला उठी,

बेर्नादेत्त वहाँ से भाग निकली। बेर्नादेत्त भागते–भागते लगभग चार बजे शाम कॉन्वेंट पहुँची और पवित्र साक्रमेंत के सामने घुटनों के बल गिरकर आँसु बहाती हुई येसु को बहुत– बहुत धन्यवाद दी, ईश्वर की बड़ी दया और फादरों, मदरों, लड़कियों और सब भले लोगों की तेज प्रार्थनाओं से यह विजय उसे मिली। कॉन्वेंट में बेर्नादेत्त को अकेले देखकर सब घबराने लगे और सिसिलिया और बेरोनिका का हाल खबर पूछने लगे। किन्तु बेर्नादेत्त को खुद ही मालूम नहीं कि उन दोनों को क्या–क्या हुआ। सूर्यास्त हो चुका था तब बेरोनिका और सिसिलिया भी आ पहुँचीं। जब तीनों एक साथ मिलीं तो उनकी खुशी का ठिकाना न था। दूसरी ओर घरवालों ने बेर्नादेत्त के नाम नाना प्रकार की धमकी देकर मदर को एक चिट्ठी लिखी और जो भी कपड़ा व सामान उसके पास था उसे मांगने लगे। यह सुनते ही बेर्नादेत्त फटे–पुराने कपड़ों को छोड़कर सभी कपड़ों को बक्से में सजाके उसके अन्दर एक छोटी चिट्ठी रख कर भेज दिया। घरवाले कपड़ा और चिट्ठी देखकर अचम्भे में पड़ गये। बेर्नादेत्त की दयनीय दशा देखकर मदरों और लड़कियों से रहा नहीं गया, वे अपने खर्च से आवश्यक वस्तुएँ देने लगीं।

बिशप पौल गुथल्स कलकत्ते से फिर राँची आये और सारी घटनाओं की जानकारी लेते हुए बोले कि अगर तुम लोगों को कॉन्वेंट जीवन जीने की तेज इच्छा है तो कम से कम आठ वर्ष तक ठहरना होगा। अतः इनके धार्मिक जीवन की परख हेतु सोदालिती याने निष्कलंक कुवांरी मरिया की संगत में इन्हें भर्ती किया गया। उसी दिन से मदरों के साथ रहकर वे हर काम को बड़ी रुचि से करने लगीं। १८९५ और १८९६ के बीच भयानक महामारी याने हैजा और आकाल देश में फैल गया और लोग भूख और बीमारी से मरने लगे। स्कूल बंद कर दिया गया और बोर्डिंग की सभी लड़कियों को घर भेज दिया गया। किन्तु बेर्नादेत्त और उसकी बहनें अपनी स्वतंत्र इच्छा से बोर्डिंग में हीं रहकर फादरों और मदरों के साथ टोला–टोला, बस्ती और गाँवो में जाकर चावल,दाल, कपड़ा–लता दवाई इत्यादि बांटने में सहायता करती थीं।

अक्टूबर १८९६ ई० को बेर्नादेत्त और उसकी बहनें अपने माता–पिता से विदा लेकर कॉन्वेंट में रह गई। इसी बीच और एक झंझट आ पड़ा। जोनस तिग्गा, बढ़म्बई का लड़का बेर्नादेत्त को शादी के लिए जबरदस्त करने लगा। उसकी ये हरकत देखकर बेर्नादेत ने कहा–"प्यारे भाई जोनस, आप को मालूम होवे कि मैं येसु की सेवा में जाने चाहती हूँ इसलिए आप अपनी बात काम और चाल से मेरे रास्ते पर कुछ भी कंकड़, ईंट, पत्थर के टुकड़े मत बिछाइयेगा ऐसा कि मैं अपनी मानुषिक कमजोरी के कारण ठोकर खाकर न गिर पड़ूँ। इतना ही नहीं

किसी प्रकार की हवा या बयार के झोंके से एक पत्ती या छोटा कागज का टुकड़ा तक मेरे पास मत उड़ाइयेगा। यही तो हमारी अन्तिम विदाई का प्रेमी नमस्कार है, सो जानियेगा।”

इस प्रकार बेर्नादित्त और उसकी बहनों ने असीम दयालु ईश्वर की कृपा से सभी तरह की परीक्षाओं में विजय प्राप्त की। अब धीरे-धीरे लोगों की आँखे खुल गई इन लड़कियों की चाल-ढाल, बात विशेषकर इनके कामों को देखकर विचार करने लगे कि इनका इरादा बिलकुल ठीक और पक्का है इसलिए अगर दूसरे- दूसरे देश की लड़कियाँ संघ जीवन व्यतीत कर ईश्वर की बड़ाई और आत्माओं की मुक्ति के हेतु कितने-कितने धर्म काम करती हैं, तो यहाँ इस देश में क्यों नहीं हो सकेगा? इसी पवित्र सोच के साथ महामान्यवर प्यारे बिशप पौल गुथल्स ने २६ जुलाई १८९७ में संत अन्ना की बेटियों के धर्मसंघ की नींव डालना मंजूर किया।

अतः मेरी बेर्नादित्त के अदम्य साहस, अग्रसोची तथा प्रबल नेतृत्व में संत अन्ना की पुत्रियों का धर्मसंघ छोटानागपुर की पवित्र भूमि में जन्म लिया। वे ६४ वर्षों तक कलीसिया एवं लोगों की सेवा में समर्पित रहीं तथा १६ अप्रैल १९६१ को प्रभु का पवित्र कार्य पूरा कर सदा के लिए स्वर्गीय पुरस्कार प्राप्त करने हेतु प्रभु की प्रिय हो गईं। सच तो यह है कि मेरी बेर्नादत्त समय से बहुत पहले की एक साहसी एंव होशियार नारी थी।

माता मेरी बेर्नादित्त किस्पोट्टा के जीवन की मुख्य घटनाएँ एवं तिथियाँ

- २ जून १८७८ ईस्वी : माता मेरी बेर्नादित्त किस्पोट्टा का जन्म, सरगाँव में।
- १६ जून १८७८ : लूथेरन चर्च में बपतिस्मा।
- २ जून १८९० : लोरेटो कोन्वेंट स्कूल में दाखिला
- ३१ जुलाई १८९० - काथलिक विश्वास को स्वीकार किया उसी दिन प्रथम परम प्रसाद ग्रहण किया। उसे नया नाम दिया गया : मरिया बेर्नादित्त।
- २१ फरवरी १८९२ को कलकत्ता के महाधर्माध्यक्ष पौल गोथल्स के कर कमलों से बेर्नादित्त का दृढ़ीकरण संस्कार।
- २४ मई १८९७, बेर्नादित्त और उनकी अन्य तीन बहनों के सोच जानकर कलीसिया के अधिकारियों ने उन्हें पहले सोदालिती के रूप में स्वीकार किया।
- २६ जुलाई १८९७, उन चारों लड़कियों को संत अन्ना की पुत्रियाँ राँची के धर्मसंघ में प्रथम प्रार्थिनियों के रूप ग्रहण किया गया।
- ६ फरवरी १८९९, नवशिष्यालय में प्रवेश
- ८ अप्रैल १९०१ प्रथम व्रतधारण किया।

- १ नवम्बर १९०३–३१ अक्टूबर १९०६, माता मेरी बेर्नादित्त धर्मसंघ की प्रथम सुपीरियर जेनरल नियुक्त की गई।
- २१ नवम्बर १९१५–३१ दिसम्बर १९१८, माता मेरी बेर्नादित्त धर्मसंघ की दूसरी बार सुपीरियर जेनरल नियुक्त की गई।
- १४–२९ जुलाई १९४६, माता मेरी बेर्नादित्त तपेदिक (टी.बी) बीमारी के कारण हॉली फैमिली अस्पताल, माण्डर में भरती की गयी। जीवन के अंतिम काल के रूग्नावस्था में उनके गुण, जैसे धीरता व सहनशीलता, और भी झलकने लगे। वह कहा करती "येसु के दुःख से मेरा दुःख कितना कम है।" पूर्ण रूप से अपने को नर्स के हाथों में सौंपकर दुःख के समय कहती थी कि "प्रभु मैं आपके पास जाना चाहती हूँ किन्तु मेरी इच्छा नहीं, तेरी पवित्र इच्छा पूरी हो।"
- १६ अप्रैल १९६१, माता मेरी बेर्नादित्त ने संत अन्ना कॉन्वेंट राँची के मूलमठ में धर्मबहनों एवं नोविसों की प्रार्थनाओं एवं तीर–विनती के मध्य अंतिम साँस ली।

## प्रभु की सेविका माता मेरी बेर्नादित्त की मध्यस्थता एवं धन्य घोषणा के लिए प्रार्थना

हे ईश्वर, समस्त कृपाओं के स्रोत, हम प्रभु की सेविका, माता मेरी बेर्नादित्त किस्पोट्टा के लिए तुझे धन्यवाद देते हैं, जिनको तूने विभिन्न आध्यात्मिक वरदानों से विभूषित किया। सुसमाचारी साक्ष्य देने और गरीबों की सेवा के लिए तूने ही उसको संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ राँची की स्थापना करने की प्रेरणा दी है।

माता मेरी बेर्नादित्त किस्पोट्टा छोटानागपुर में सुसमाचारी साक्ष्य देने के लिए भेजे गये प्रभु के सेवक, फादर कोन्सटंट लीवन्स और लोरेटो घर्मबहनों के पद चिन्हों पर चली। उनके द्वारा अपनी ईश्वरीय बुलाहट को पहचानकर उसने स्वर्गिक माता मरियम की तरह ईश–वचन को अपने हृदय में संजोये रखा और उस पर सोच–विचार करती रही। अनेक विपरीत घटनाओं और विभिन्न कठिनाईयों के बावजूद वह तेरे प्रेम में अडिग बनी रही।

करूणा, दया और प्रेम के साथ रोगियों, उपेक्षितों और जरूरतमंदों की सेवा में वह समर्पित रही। जाति और धर्म से परे, गाँवों और टोलों में जा–जाकर उसने ज्वलन्त उत्साह के साथ प्रभु येसु के आनन्ददायी सुसमाचार की घोषणा की।

हे स्वर्गिक पिता, हम तुझसे अनुनय–विनय करते हैं कि माता मेरी बेर्नादित्त किस्पोट्टा के आदर्शों पर चलते हुए हम भी निःस्वार्थ हृदय और पूरी शक्ति से ईश्वर तथा लोगें को प्यार करें और उनकी सेवा करें। प्रभु की सेविका, माता मेरी बेर्नादित्त की मध्यस्थता द्वारा हम दीनता पूर्वक तुझसे यह कृपा माँगते हैं। (.....व्यक्तिगत निवेदन को मन–ही–मन व्यक्त करें।)

हम दीनता पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि माता कलीसिया उनके वीरोचित सद्गुणों को अनुमोदन करते हुए स्वर्ग में स्थित धन्य आत्माओं की संगति में उन्हें सम्मिलित करने की कृपा करें। हम यह प्रार्थना करते हैं, उन्हीं हमारे प्रभु येसु मसीह के द्वारा। आमेन।

Teles. P. Card. Toppo
Telesphore P. Cardinal Toppo
Archbishop of Ranchi

यदि किसी को चंगाई या किसी तरह की कृपा मिलती है तो इस पते पर संपर्क करें।
पोस्टुलेटर, संत अन्ना जेनेरालेट, लोवाडीह, पी.ओ. नामकुम, जिला–राँची–834010, झारखंड, भारत
मो.–6204288118 E-mail : marybernadettesog@gmail.c